तुलनात्मक विधि :-

बी० सी० वालिस के शब्दों में "उच्च कक्षाओं में तुलना, समानता तथा विषमता आदि ही भूगोल - शिक्षण के प्राण हैं।" यद्यपि और शिक्षण स्तरों पर भी इस विधि का उपयोग होता है, परन्तु इसका सफल प्रयोग उच्च कक्षाओं में ही किया जा सकता है। इस विधि द्वारा भूगोल का अध्ययन 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' अग्रसर होता है।

इस विधि में यह आवश्यक है कि स्थानीय भूगोल के क्षेत्रफल, अक्षांश, देशान्तर, समुद्र तल से ऊँचाई पहाड़ों से ऊँचाई, नगरों का क्षेत्रफल तथा जनसंख्या सम्बन्धी कुछ आँकड़े स्मरण रखने चाहिए। ये आँकड़े दूसरे स्थानों के आँकड़ों के लिए तुलना सम्बन्धी मापक होंगे। इटली की पो नदी के बेसिन की तुलना गंगा के मैदान से भली-भाँती की जा सकती है। इसी प्रकार स्विट्जरलैण्ड तथा कश्मीर और नील नदी की घाटी की तुलना सिन्धु नदी की घाटी से भली-भाँती की जा सकती है।

ज्ञान का व्यवस्थित संगठन करने के लिए तथा पाठों को दुहराते समय इस पद्धति का सहारा लेने से लाभ होता है। ग्रेट-ब्रिटेन तथा जापान की तुलना सरलतापूर्वक की जा सकती है। अमेजन तथा कांगो-बेसिन के अध्ययन में इस विधि से सहायता मिलती है; क्योंकि इन बेसिनों में बहुत समानता देखनों को मिलता है।

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर इस विधि का उपयोग हो सकता है। प्रारम्भिक कक्षाओं में भूगोल को पढ़ाते समय निरीक्षण और वर्णन के साथ तुलना का उपयोग करना उचित होगा। स्थानीय भूगोल की सहायता से प्रान्त और देश के भूगोल की बराबर तुलना की जा सकती है। उच्च कक्षाओं में भी प्रादेशिक पद्धति से भूगोल पढ़ाते समय तुलनात्मक पद्धति का सहारा लिया जा सकता है। तुलनात्मक पद्धति का उपयोग करने से परिश्रम और समय बचता है और बालकों को भौगोलिक सिद्धान्तों का अच्छा ज्ञान प्राप्त हो जाता है।